eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

पंडित जवाहरलाल नेहरू का भारतीय राजनीति में योगदान

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Abstract

पंडित जवाहरलाल नेहरू भारतीय राजनीति के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में देश को दिशा प्रदान की। नेहरू की नीतियाँ आधुनिक भारत के निर्माण की नींव बनीं। इस शोध पत्र में उनके राजनीतिक योगदान, समाजवाद, आर्थिक नीतियों, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और लोकतंत्र की स्थापना में भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

कीवर्ड– पंडित जवाहरलाल नेहरू, भारतीय राजनीति, स्वतंत्रता संग्राम, समाजवाद, लोकतंत्र, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, पंचवर्षीय योजना, विदेश नीति।

Introduction

पंडित जवाहरलाल नेहरू भारतीय राजनीति के इतिहास में एक केंद्रीय व्यक्तित्व थे। उनका नेतृत्व स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्र भारत की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण रहा। उनका समाजवादी दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्षता की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। नेहरू केवल एक राजनेता ही नहीं, बल्कि एक कुशल विचारक, लेखक और दूरदर्शी नेता भी थे। उन्होंने भारतीय राजनीति को आधुनिकता, वैज्ञानिक सोच और समाजवादी नीतियों की दिशा में अग्रसर किया। उनके विचारों का प्रभाव न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पड़ा। वे भारतीय युवाओं के प्रेरणास्त्रोत बने और भारतीय राष्ट्रवाद को एक नई पहचान दी।

उनकी नेतृत्व शैली में एक संतुलन था, जहाँ वे राष्ट्रीय आंदोलन के संघर्षशील नेता भी थे और स्वतंत्र भारत के शांतिपूर्ण विकास के पक्षधर भी। उनकी विचारधारा लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद की त्रयी पर आधारित थी, जिससे भारतीय राजनीति को एक नई दिशा मिली। उन्होंने केवल राजनीतिक सुधार ही नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के लिए भी महत्वपूर्ण नीतियाँ बनाई। इस शोध पत्र में नेहरू के योगदान को विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया गया है, ताकि उनके कार्यों और उनके दूरगामी प्रभाव को समग्र रूप से समझा जा सके।

पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर 1889 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में एक समृद्ध और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता, मोतीलाल नेहरू, एक प्रमुख वकील और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता थे। उनकी माता, स्वरूपरानी नेहरू, एक धार्मिक और संस्कारी महिला थीं।

नेहरू की प्रारंभिक शिक्षा हररो और ईटन स्कूल (इंग्लैंड) में हुई। इसके बाद, उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज से स्नातक किया और फिर इन्स ऑफ कोर्ट से वकालत की शिक्षा प्राप्त की। इंग्लैंड में अध्ययन के दौरान वे पश्चिमी दर्शन, राजनीति और इतिहास से प्रभावित हुए। हालाँकि, वे

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति भी आकर्षित रहे। 1912 में भारत लौटने के बाद, नेहरू ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की, लेकिन उनका झुकाव राजनीति की ओर अधिक था। 1916 में उनका विवाह कमला नेहरू से हुआ। 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद, वे पूरी तरह से स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हो गए। उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन (1920–22) में भाग लिया और पहली बार जेल गए। इस दौरान, वे कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेताओं में से एक बन गए।

1929 में, लाहौर अधिवेशन में, नेहरू को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। इस अधिवेशन में उन्होंने पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) की मांग की और 26 जनवरी 1930 को इसे सार्वजनिक रूप से घोषित किया।

1930 और 1940 के दशक में, नेहरू ने कई बार जेल यात्रा की। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों की नीतियों का विरोध किया और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में सक्रिय भूमिका निभाई। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के समय, वे भारत के पहले प्रधानमंत्री बने और देश के नव–निर्माण में अपने विचारों को लागू करने का अवसर प्राप्त किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान– पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख भूमिका निभाई। उनका योगदान केवल राजनीतिक आंदोलन तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को एक वैचारिक दिशा भी दी। उन्होंने आधुनिकता, समाजवाद, वैज्ञानिक सोच और राष्ट्रीय एकता के विचारों को स्वतंत्रता संग्राम में समाहित किया।

असहयोग आंदोलन और नेहरू– 1920 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन शुरू हुआ, जिसमें नेहरू ने सक्रिय भाग लिया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई, और कई सभाएँ आयोजित कीं। इस दौरान वे पहली बार गिरफ्तार हुए और जेल गए।

सविनय अवज्ञा आंदोलन– 1930 में महात्मा गांधी द्वारा नमक सत्याग्रह के रूप में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया गया। नेहरू ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया और जनता को ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध जागरूक किया। उन्हें इस आंदोलन के दौरान भी जेल जाना पड़ा।

भारत छोड़ो आंदोलन– 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को तत्काल समाप्त करना था। इस आंदोलन के दौरान नेहरू को गिरफ्तार कर लिया गया और वे लगभग तीन वर्षों तक जेल में रहे। इस आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता की नींव मजबूत कर दी और अंततः 15 अगस्त 1947 को देश को स्वतंत्रता मिली।

नेहरू का वैचारिक योगदान– नेहरू केवल एक आंदोलनकारी नहीं थे, बल्कि उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को एक व्यापक वैचारिक आधार भी दिया। उन्होंने समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र को स्वतंत्र भारत के लिए आवश्यक बताया। उनका मानना था कि एक स्वतंत्र भारत को वैज्ञानिक सोच, शिक्षा और औद्योगीकरण की ओर बढ़ना चाहिए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नेतृत्व की भूमिका– नेहरू ने कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कई महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णय लिए। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्वतंत्रता के समर्थन में माहौल बनाया और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

ब्रिटिश सरकार की नीतियों की आलोचना की। वे भारतीय युवाओं के प्रेरणास्रोत बने और स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा प्रदान की।

नेहरू और अंतरराष्ट्रीय समर्थन– नेहरू ने भारत की स्वतंत्रता के समर्थन में वैश्विक स्तर पर आवाज उठाई। उन्होंने ब्रिटिश सरकार की नीतियों की आलोचना करते हुए अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान भारत की स्वतंत्रता की ओर आकर्षित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नेहरू का योगदान केवल उनके राजनीतिक नेतृत्व तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए एक सुदृढ़ बौद्धिक और वैचारिक आधार भी प्रदान किया।

स्वतंत्र भारत के निर्माण में भूमिका– स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नेहरू ने देश की शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करने में अहम योगदान दिया। उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण को प्रोत्साहित किया और लोकतांत्रिक व्यवस्था की नींव रखी।

लोकतंत्र की स्थापना– नेहरू ने भारत में संसदीय लोकतंत्र की जड़ें मजबूत करने के लिए स्वतंत्र चुनावों की व्यवस्था की। 1952 में हुए पहले आम चुनावों में उन्होंने लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित किया।

धर्मनिरपेक्षता की नीति– नेहरू ने धर्मनिरपेक्षता को भारतीय राजनीति का आधार बनाया। उन्होंने संविधान में सभी धर्मों को समान मान्यता देने की नीति अपनाई, जिससे भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बना।

आर्थिक नीतियाँ और पंचवर्षीय योजनाएँ– नेहरू ने भारत के आर्थिक विकास के लिए समाजवादी नीतियों को अपनाया। उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा दी और पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत की। उनके प्रयासों से भारत में औद्योगीकरण को बढ़ावा मिला।

प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951–1956)– प्रथम पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र को सशक्त करना था। इस योजना के तहत सिंचाई और ऊर्जा क्षेत्रों में निवेश किया गया।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956–1961)– इस योजना का उद्देश्य औद्योगीकरण को बढ़ावा देना था। सार्वजनिक क्षेत्र को प्राथमिकता दी गई और भारी उद्योगों की स्थापना की गई।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन और विदेश नीति– नेहरू ने भारत की स्वतंत्र विदेश नीति को बढ़ावा दिया। उन्होंने 1955 में बांडुंग सम्मेलन में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की आधारशिला रखी। उनकी नीति का उद्देश्य शीत युद्ध की राजनीति से भारत को दूर रखना था।

पंचशील सिद्धांत– नेहरू ने चीन के साथ पंचशील सिद्धांतों को अपनाया, जो शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के पाँच बुनियादी सिद्धांत थे।

संयुक्त राष्ट्र में भूमिका– नेहरू ने भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ का सक्रिय सदस्य बनाया और विश्व शांति के लिए प्रयास किए।

लोकतंत्र और समाजवाद की स्थापना में योगदान– नेहरू ने भारतीय लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद को बढ़ावा दिया और जातिवाद तथा सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष किया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में योगदान– नेहरू ने शिक्षा और विज्ञान को देश के विकास का आधार माना। उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM), और वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों की स्थापना की।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)– 1956 में स्थापित न्छब् का उद्देश्य उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना था।

अंतरिक्ष और परमाणु अनुसंधान– पंडित जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत को वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने अंतरिक्ष और परमाणु अनुसंधान के विकास को प्राथमिकता दी, जिससे भारत ने वैज्ञानिक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव– नेहरू के शासनकाल में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ISRO की नींव पड़ी। उन्होंने 1962 में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (INCOSPAR) की स्थापना की, जो बाद में इसरो में परिवर्तित हुई।

उनका मानना था कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केवल रक्षा के लिए ही नहीं, बल्कि संचार, कृषि, मौसम पूर्वानुमान और राष्ट्रीय विकास के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। डॉ. विक्रम साराभाई नेहरू के इस दृष्टिकोण से प्रभावित थे और उन्होंने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

परमाणु अनुसंधान की शुरुआत– नेहरू ने भारत के परमाणु कार्यक्रम की भी नींव रखी। उन्होंने वैज्ञानिक होमी जे. भाभा के नेतृत्व में 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग (Atomic Energy Commission) की स्थापना की। उनका उद्देश्य भारत को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाना था, ताकि देश ऊर्जा और अनुसंधान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सके।

नेहरू परमाणु ऊर्जा का उपयोग शांतिपूर्ण उद्देश्यों, जैसे कि बिजली उत्पादन, कृषि सुधार, चिकित्सा और उद्योग के लिए करना चाहते थे। उनके इस दृष्टिकोण ने भारत के परमाणु कार्यक्रम को मजबूती प्रदान की, जिसका प्रभाव आज भी देखा जा सकता है।

विज्ञान और तकनीकी विकास की दिशा– नेहरू का वैज्ञानिक सोच और अनुसंधान पर जोर भारतीय विज्ञान और तकनीकी संस्थानों की स्थापना में परिलक्षित हुआ। उनके प्रयासों से, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs) स्थापित किए गए। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद को प्रोत्साहन मिला। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र की स्थापना हुई।

नेहरू के प्रयासों से भारत ने विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की। उनकी दूरदर्शिता ने भारत को अंतरिक्ष और परमाणु अनुसंधान के क्षेत्र में एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। उनके द्वारा रखी गई नींव पर आज भारत वैश्विक स्तर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एक अग्रणी राष्ट्र बन चुका है।

नेहरू की आलोचना और विरासत– हालाँकि नेहरू भारतीय राजनीति में एक प्रमुख हस्ती थे, लेकिन उनकी कुछ नीतियों की आलोचना भी हुई।

आर्थिक नीतियाँरू नेहरू की समाजवादी आर्थिक नीतियों को कुछ आलोचकों ने धीमी विकास दर (हिंदू ग्रोथ रेट) का कारण माना।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

कश्मीर नीति, कश्मीर मुद्दे पर उनके निर्णयों, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र में मामला ले जाने के फैसले की आलोचना की गई।

चीन नीति, 1962 के भारत–चीन युद्ध में भारत की हार के लिए उनकी विदेश नीति को जिम्मेदार ठहराया गया।

नेहरू की विरासत– नेहरू की नीतियों और विचारों का भारत पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा।

लोकतंत्र और संस्थाएँ– उन्होंने लोकतांत्रिक संस्थाओं, पंचवर्षीय योजनाओं और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन– उन्होंने शीत युद्ध के दौरान भारत को गुटनिरपेक्ष बनाए रखा।

आधुनिक भारत की नींव– उनके प्रयासों से भारत विज्ञान, उद्योग, शिक्षा और विदेश नीति के क्षेत्रों में आगे बढ़ा।

नेहरू की विरासत आज भी भारतीय राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था में देखी जा सकती है। उनके आदर्शों ने आधुनिक भारत के निर्माण में एक मजबूत आधार प्रदान किया।

हालाँकि, नेहरू की नीतियों की आलोचना भी हुई, विशेष रूप से चीन के साथ 1962 के युद्ध में उनकी कूटनीतिक विफलता के लिए। लेकिन उनकी विरासत आधुनिक भारत की नींव में अमिट रूप से अंकित है।

चीन–भारत युद्ध, 1962– चीन के साथ युद्ध में नेहरू की विदेश नीति विफल रही, जिससे उनकी लोकप्रियता प्रभावित हुई।

उनकी नीतियों की विरासत– नेहरू की नीतियाँ आज भी भारतीय राजनीति में मार्गदर्शक बनी हुई हैं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू भारतीय राजनीति में एक असाधारण नेता थे, जिन्होंने आधुनिक भारत की नींव रखी। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्र भारत के विकास तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी समाजवादी नीतियाँ, लोकतांत्रिक आदर्श, वैज्ञानिक सोच और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति ने देश को एक नई दिशा दी। हालाँकि उनकी कुछ नीतियों की आलोचना भी हुई, फिर भी उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

नेहरू के विचार और नीतियाँ आज भी भारतीय राजनीति और समाज पर प्रभाव डालती हैं। उनकी विरासत एक प्रेरणा स्रोत बनी हुई है और उनका दृष्टिकोण भारत के सतत विकास के लिए मार्गदर्शक बना रहेगा। पंडित जवाहरलाल नेहरू भारतीय राजनीति के सबसे महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे। उनके समाजवादी दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक मूल्यों और आधुनिक भारत के निर्माण में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 05, May 2023

संदर्भ सूची–

1. भारत की खोज – जवाहरलाल नेहरू (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)
2. विश्व इतिहास की झलक – जवाहरलाल नेहरू (पेंगुइन बुक्स)
3. मेरी कहानी – जवाहरलाल नेहरू (सस्ता साहित्य मंडल)
4. नेहरू– भारत का निर्माण – एम.जे. अकबर (ब्लूम्सबरी)
5. नेहरू– द इन्वेंशन ऑफ इंडिया – शशि थरूर (पेंगुइन बुक्स)
6. आधुनिक भारत के निर्माता – बिपिन चंद्र (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)
7. भारत के प्रधानमंत्री– जवाहरलाल नेहरू से नरेंद्र मोदी तक – संजय द्विवेदी (किताबघर प्रकाशन)
8. नेहरू और आधुनिक भारत – जे.एन. दीक्षित (ज्ञान पब्लिशिंग हाउस)
9. नेहरूरू ए पॉलिटिकल बायोग्राफी – माइकल ब्रेचर (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)
10. भारतीय राजनीति और नेहरूवादी दृष्टिकोण – रामचंद्र गुहा (हरपर कॉलिन्स)
11. गांधी, नेहरू और भारत की स्वतंत्रता – पी.एन. चोपड़ा (स्टर्लिंग पब्लिशर्स)
12. नेहरू एंड द कांग्रेस इकोनॉमिक पॉलिसी – बिपिन चंद्र (सेज पब्लिकेशन्स)
13. नेहरू की विदेश नीति – बिमल प्रसाद (विकास पब्लिशिंग हाउस)
14. नेहरू डायनेस्टी – के.एन. राव (विजन बुक्स)
15. आर्ग्युमेंटेटिव इंडियन – अमर्त्य सेन (फरार, स्ट्रॉस एंड गिरॉक्स)
16. मेकर ऑफ मॉडर्न इंडिया – रामचंद्र गुहा (हरपर कॉलिन्स)
17. इंडिया आफ्टर गांधी – रामचंद्र गुहा (पिकाडोर)
18. इंडियन पॉलिटी – एम. लक्ष्मीकांत (मैकग्रा हिल एजुकेशन)
19. इंडियाज ट्राइस्ट विद डेस्टिनी – जगदीश भगवती और अरविंद पनगढ़िया (हरपर कॉलिन्स)
20. द नेहरू–गांधी डायनेस्टी – तारिक अली (वर्सो बुक्स)
21. द ग्रेट इंडियन स्ट्रगल – सुभाष चंद्र बोस (फीनिक्स पब्लिकेशन्स)
22. नेहरूरू ए ट्राइस्ट विद डेस्टिनी – स्टेनली वोल्पर्ट (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस)
23. नेहरू एंड इंडियन पॉलिटी – आर.सी. गुप्ता (स्टर्लिंग पब्लिशर्स) ord University Press)